ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हे**तु निर्दिष्ट** करना वां<mark>छनीय समप्तते हैं :</mark>

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की निर्मा की श्रामित्र की का प्रयोग 'करते 'हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा 'सरकारी अधिसूचना' स.-3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18' अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7' के श्रधीन 'गठित श्रम 'न्यायालय, 'श्रम्बाला 'को विवादग्रस्त 'या उससे सम्बन्धित 'नीचे लिखा "मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं 'जो कि 'उक्त 'प्रबन्धकों क्षिया "श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत 'श्रथवा मम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बलाया राम की सेवाओं का समापन/छंटनी न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत का</mark> हकदार है ?

सं अो वि वि (एफ.डी./132-87/42211—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि मयूर टूल्ज प्रार्व िलि व , प्लाट नं व 70 , सैक्टर 6 , फरीदाबाद, के श्रमिक श्री समय सिंह , पुत्र श्री गोकुल चन्द मार्फत 51-ए, सैक्टर 6 हिन्द मजदूर सभा , * फरिदाबाद तथा प्रबन्धकों के भिष्ठय इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई स्थीदयोगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके धारा उक्त प्रधिनियम, की धारा 7-क के प्रधीन गठित धोद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवत्थकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं प्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री समय सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, 'तो 'वह किस राहत का हकदार है?

संख्या श्रो० वि०/ एफ.डी./132-87/42218 — चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं • मयूर दूल्ज, प्रा० लि०, प्लाट नं० 70, सैक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री डाल सिंह, पुत्र श्री श्रीपाल नाफंत 51-ए, हिन्द मजदूर सभा, सैक्टर 6, फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीकींगिक विवाद है;

रक्षीर पूर्विक हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को रन्यायनिर्णय हेतुर-निर्दिष्ट करना-वांछ नीय समझते हैं;

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की श्वराधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा अंबान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित औद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं अथवा .विवाद से सुसगत या सम्बन्धित मामला हैं व्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

"स्या श्री 'डाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायौचित तथा ठीक है '? यदि 'नहीं, 'तो बह किस राहत का है हकदार है ?
सं क्षे वि व (एफ व्ही व) 135-87 42225 - चूंकि हरिमाणा के राज्यवाल की राय है कि मैं व पी व्हिल की पेपर
मिल्ज लि व , 87-88, सैक्टर 25, फरीदाबाद , के श्रीमक श्री अभी चन्द तथा अन्य चार श्रीमक (अनुबन्द ''कं") माफेत श्री श्याम सुन्दर गुप्ता, 50 नीलम चौक, फरीदाबाद , तथा अवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामने के सम्बन्ध में कोई मोद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना नांधनीय समझते हैं;

्रहसलिह, अब, 'भौबोगिक' विवाद अधिनियम, 1947 की भारा 10 की वपश्चारा (1) के खण्ड (व) द्वारा प्रदान की मई 'शिक्तिकों का 'प्रयोव' करते हुने हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा चन्त अधिनियम की धारा 7-क के भेधीन गठित भौकि कि प्रतिकरण, ''हैरियाणा, 'करीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उन्त अबन्यकों तथा 'अनिकों 'के बीच 'वा तो विवादवस्त मामला 'के हैं अबवा विवाद से बुवंगत या सम्बन्धित मामला है न्यावनिर्णय एवं बंचाट 3 मास में देने हेतू 'निर्दिष्ट करते हैं :--

क्बा श्री भ्रमी चन्द तबा भ्रन्य चार श्रमिकों (अनुबन्ध "क") की सेवाओं का समापन न्यायीचिंत तबा ठीक है ? े यदि नहीं, तो वह किस राहत के हकदार हैं ?

म्रनुबन्ध ''कृ''

- 1. श्रीममी चन्द
- (2. श्री नवल सिंह
- ∙3. ३श्री⊹हरस्वरूप
- .4. श्री तुला राम
- 5. श्रीश्योम प्रकाश

्षीर (चूंकि हरियाशा के राज्यपाल इसः विवादः को न्यायनिर्णय ुहेतु निर्दिष्ट करना ,वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, मन, श्रीकोगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947-की धारा 10की उपधारा (1)को बण्ड (ध) द्वारा श्रिक्तन की श्रिक्त का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रीवित्यम की धारा है?-के को मीचि विनिद्दिष्ट मामला जो कि उपवार श्रीवित्यम की धारा है अपने श्रीकि के की की की विनिद्दिष्ट मामला जो कि उपवार अपने श्रीक के की की की विनिद्दिष्ट मामला जो कि उपवार अपने की देन हेतु कि विषय करते हैं:---

क्या श्री मुन्शी राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस - राहत का - हकदार है ?

न्सं व भो व विविध्य कि । 49-87/42240.— चूकि हरियाणा कि रशज्यपाल की राय है कि भे व काहबाद को केरिटन जूपर कि निल कि , शाहबाद मारकण्डा कि श्रमिक की देश राज, पृत्न श्री त्तुलसी काम, गांव गामरी, व्हाव मदनपुर, के जिला कि इसे व सभा असके त्रवन्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के कि कोई की बोगिक विधाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस्र लिए, पब, भौद्योगिक विवास अधिनियम, 1947 की द्यारा 10 की उपद्यारा (1) के खण्ड (म) द्वारा भवान की गेर्ड मेन्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इस के द्वारा सरकारी प्रविस्तूचना सं० 3(44)84-3श्रम, विनाक 18 प्रवेल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम को द्यारा 7 के अवीन गठित श्रम न्यायालय, भ्रम्बाला, की विवादयस्त 'या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में 'देने हेतु निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवासकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से मुसंगत प्रथम सम्बन्धित मामला है :---

ंनिया श्री वेश राज की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस' राहतका हकदार है ?

्सं क्यो विव | रोह् | 93-87 | 42247 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व लक्षमी प्रीसिजन क्षुयुज जिंक, हिसार रोह, रोह्तक, के श्रीमिक श्री गुलशन शर्मा, पुत्र श्री बिहारी लाल शर्मा, मकान नं 967 | 23, नया बाजार, मोधी नगर, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

े प्रतीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इसः विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना वां**छनीय स्समक्षते हैं** ;

इसलिये, श्रव, श्रीक्षोगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई जिन्तियों का श्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं० 9641-1-श्रम-१८/ 82573, दिनांक 6 नवस्वरं, 1970 के साम गठित सरकारी श्रिष्ठिसूचना की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, रोहंतक को विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :

क्या श्री गुलशन शर्मा की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं ग़ैर-हाजिर हो कर लियन छोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं शो वि गुड़गांव 250-87 42255. चूिक हिरियाणा के राज्यपास की राय है कि मैं वि निश्रो लि वि, दिल्ली रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्रीमित कृष्णा यादव, पत्नी श्री राम पत, मार्फत श्री श्रद्धानन्द, महासचिव, जनरल फैक्ट्री वर्करज यूनियन (एटक) गुड़गांव, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रवोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के भ्रिधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिकिरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे, विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रुपवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

ें क्या श्रीमति कृष्णा यादव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं भो वि वि वि 42-87/42262 — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं (1) उप-कुलपित, अ दिस्याणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, (2) को-म्राडीनेंटर, कृषि ज्ञान केन्द्र, 546, म्रबंन म्रस्टेंट, कुछलेंद्र, के श्रमिक श्री कि मदन लाल, पुतः श्री गोबिन्द राम, मकान नं 783/5, गुरु नानकपुरा मुहल्ला, थानेंसर, जिला कुरुलेंद्र तथा उसके प्रबन्धकों के कि मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ं **गौ**र चूंकि हरियाणा के राज्यशल इस विवाद को न्यायनिर्गय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अन्न ग्रीबोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई गिनिस्यों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं 3(44)84-3 श्रम, दिनांक कि श्रीक, 1984 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

नया श्री मदन लाल की सेवाग्नों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि | हिसार | 96-87 | 42269 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं परियोजना निर्देशक भारत भाष्ट्रेलियन, पन्नु प्रजनन परियोजना, हिसार के श्रमिक श्री प्रताप सिंह, पुत्र श्री बीरबल, ग्रांव व डाकखाना तलवन्डी राणा, तहसीस व जिसा हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

भीर पृक्षि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को ग्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

> क्या श्री प्रताप सिंह की सेवग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो, वह⊦किस्र≳राहत का हुकदार है?